नियोजित तरीके से करना चाहिए, ताकि उनका अधिकतम लाभ उठाया जा सके, अधिकतम सन्तुष्टि मिल सके अधिकतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और जीवन को सफल बनाया जा सके।

साधनों को प्रभावित करने वाले कारक
(AFFECTING FACTORS OF RESOURCES)

साधनों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं—

1. **परिवार का सामाजिक-आर्थिक स्तर**—पारिवारिक साधनों को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक है—परिवार का सामाजिक-आर्थिक स्तर। समाज में विभिन्न आय वर्ग के लोग रहते हैं। उनका रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, अभिवृत्तियाँ भी अलग-अलग होती हैं। अमीर लोग धन व्यय करके अधिकतम आवश्यकताओं की संतुष्टि करते हैं तथा अनेक भौतिक वस्तुओं का उपभोग करते हैं। इसलिए उनका रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है। इसके विपरीत गरीब परिवारों में अर्थाभाव के कारण आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति भी ढंग से नहीं हो पाती है। अत: उनका रहन-सहन का स्तर निम्न कोटि का होता है।

2. **पारिवारिक जीवन-चक्र**—पारिवारिक जीवन-चक्र भी साधनों को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक प्रमुख कारक है। प्रत्येक परिवार विभिन्न जीवन-चक्र से होकर गुजरता है। पारिवारिक जीवन-चक्र भी हमेशा एक-सा नहीं रहता है। समय के साथ यह बदलता रहता है। परिवार के सदस्यों की आयु बढ़ने के साथ ही साधनों की उपयोगिता में अंतर आने लगता है। उदाहरण के लिए जब परिवार में छोटे बालक होते हैं तब उनके पालन-पोषण में अधिक समय व्यय होता है। बच्चों को खेलने के लिए खिलौनों की जरूरत होती है। बच्चों की जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है वे स्कूल से महाविद्यालय में प्रवेश करते हैं, वैसे-वैसे उनकी आवश्यकताओं में परिवर्तन आने लगती है। पारिवारिक जीवन-चक्र की एक अवस्था में जो साधन अधिक उपयोगी होते हैं वही साधन जीवन-चक्र की दूसरी अवस्था में कम उपयोगी रह जाते हैं। इसलिए आवश्यकताओं में परिवर्तन होने से साधनों का उपयोग भी प्रभावित होता है।

3. **व्यवसाय तथा पारिवारिक आय**—साधनों की उपयोगिता को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक अति महत्वपूर्ण कारक कार्य को प्रकृति अर्थात् व्यवसाय तथा पारिवारिक आय है। यह निर्विवाद सत्य है कि जिस परिवार की आय अधिक होगी, उनका रहन-सहन का स्तर ऊँचा होगा। वह परिवार के सदस्यों की अधिकाधिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर उन्हें संतुष्ट कर सकेगा। इसके विपरीत निम्न आर्थिक वर्ग के लोग कम ही साधनों को प्रयुक्त कर पाते हैं। जिस परिवार की एक निश्चित आय होती है, जैसे नौकरी पेशा व्यक्ति, तो वह अपनी मासिक आय के अनुसार ही बजट बनाकर धन व्यय करता है तथा भविष्य के लिए बचत भी करता है। अनिश्चित आय अर्जित करने वाले व्यक्ति, यथा—दुकानदार, ड्राइवर, व्यापारी आदि का रहन-सहन का स्तर उनकी दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक आय पर आधारित होता है।

4. **प्रबंध कुशलता**—व्यक्ति की कार्यकुशलता, वाक्पटुता, चातुर्य, बुद्धिमानी एवं प्रबंध कुशलता पर भी पारिवारिक साधनों की उपयोगिता निर्भर करती है। वे व्यक्ति जो व्यावहारिक तथा प्रबंध कुशल होते हैं, वे नियोजित तरीकों से साधनों का उपयोग कर पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति करते हैं। वे सीमित साधनों में भी परिवार के सभी सदस्यों की अधिकतम आवश्यकताओं को संतुष्ट करते हैं। वे साधनों का सही समय पर उपयोग कर उससे लाभ उठाते हैं न कि साधनों का अपव्यय करते हैं। इसके विपरीत अकुशल प्रबंधक साधनों का उपयोग नियोजित ढंग से नहीं करते हैं। यद्यपि वे काफी पैसे व्यय करते हैं। समय का उनके जीवन में कोई महत्व नहीं होता है। अत: साधनों का उपयोग सही तरीके से सही समय पर नहीं हो पाता है, परिणामस्वरूप परिवार के सदस्य असंतुष्ट, निराश, कुंठित एवं हीन भावना से ग्रसित रहते हैं।

5. **जीवन का दृष्टिकोण**—प्रत्येक व्यक्ति तथा परिवार के जीवन के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण होते हैं। कुछ लोग सांसारिक भोगों में पूर्ण रूप से लिप्त रहना चाहते हैं। उन्हें भौतिक वस्तुओं विशेषकर आरामदायी तथा विलासिता संबंधी वस्तुओं से काफी प्रेम होता है। इसके ठीक विपरीत कुछ लोग भौतिक चीजों से काफी दू

रहकर ईश्वर से प्रेम करते हैं। जिस व्यक्ति की जैसी विचारधाराएँ, मान्यताएँ, मूल्य, अभिवृत्तियाँ एवं विश्वास होती हैं, वह उसी के अनुकूल साधनों का उपयोग करता है। सांसारिक भोगों में हमेशा लिप्त रहने वाला व्यक्ति भौतिक वस्तुओं के क्रय, संग्रह तथा उपभोग पर अधिक बल देता है जबकि आध्यात्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति कम साधन में भी संतुष्ट रहकर प्रसन्न रहता और सुखमय जीवन बिताता है।

6. **परिवार का आकार तथा संगठन**—जब परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होती है तब अधिक साधनों का उपयोग होता है। इसके साथ ही यदि परिवार विशेष अवस्थाओं, जैसे—बाल्यावस्था, गर्भावस्था, धात्रीवस्था, वृद्धावस्था से गुजर रहा होता है तब उस परिस्थिति में भोजन, चिकित्सा और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं में वृद्धि हो जाती है। अत: साधनों में वृद्धि हो जाती है। इसके ठीक विपरीत यदि परिवार का आकार छोटा होता है तथा संगठन एकाकी होता है तब कम साधनों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार परिवार का आकार तथा संगठन भी साधनों को प्रभावित करता है।

7. **मकान और उसकी स्थिति**—मकान का आकार और इसकी स्थिति (Location) कि यह कहाँ पर स्थित है, से भी साधन प्रभावित होते हैं। यदि मकान शहर के बीचों-बीच स्थित है तथा बाजार, रेलवे स्टेशन, विद्यालय, चिकित्सालय आदि के निकट है तब धन, समय और शक्ति की काफी बचत होती है। क्योंकि कम धन, समय और श्रम व्यय करके आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। इसके विपरीत यदि मकान शहर से काफी दूर है तब विद्यालय, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि जगहों में आने-जाने में ही अधिक श्रम, समय और धन व्यय होता है। क्योंकि स्कूटर, ऑटोरिक्शा आदि का सहारा-लेना पड़ता है। स्कूटर में पेट्रोल पर व्यय होता है। इसी प्रकार ग्रामीणों की साधन संबंधी आवश्यकताएँ शहरी लोगों की अपेक्षा काफी भिन्न होती हैं। ग्रामीण लोगों की आवश्यकताएँ तथा दिनचर्या भिन्न रहने से साधनों की उपयोगिता में काफी अंतर आ जाता है।

8. **कामकाजी महिला**—कामकाजी महिलाओं की दिनचर्या तथा आवश्यकताएँ घरेलू महिलाओं से काफी भिन्न होती हैं। कामकाजी महिला के लिए समय अमूल्य है जबकि घरेलू महिला के लिए समय का कम महत्व है। कामकाजी महिला समय को बचाने के लिए धन, समय, शक्ति, बचत के उपकरण तथा अन्य साधनों का उपयोग करती है। समयाभाव की दशा में वह घर पर नाश्ता न बनाकर बाजार से बना-बनाया नाश्ता परिवार को उपलब्ध करवाती है। घरेलू महिला अपना अधिकांश समय पड़ोसी के साथ गप्पे मारने, सोने, आराम करने आदि में व्यतीत करती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि साधनों का उपयोग घरेलू तथा कामकाजी महिला के लिए भिन्न होता है।

9. **उपलब्ध साधनों और उनके विकल्पात्मक प्रयोग का ज्ञान**—यदि गृहिणी या प्रबंधक को उपलब्ध साधनों और प्रत्येक साधन के विकल्पात्मक प्रयोग की समुचित जानकारी हो तो साधनों की उपयोगिता बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए चने से कई प्रकार के मीठे और नमकीन व्यंजन, सब्जियाँ, दाल, भरवाँ परौंठे आदि बनाए जा सकते हैं। यदि गृहिणी को चने के विभिन्न उपयोगों का ज्ञान होगा तो वह इसका उपयोग कर परिवार के सदस्यों को संतुष्ट कर सकती है। इसी तरह घर के आस-पास खाली पड़ी जमीन में साग-सब्जी, फूल आदि उगाकर धन की बचत की जा सकती है तथा ताजी सब्जियाँ और गृह-सज्जा हेतु फूल प्राप्त किए जा सकते हैं। अत: सब्जियों और फूलों पर होने वाले व्यय को रोका जा सकता है। साधनों के कई विकल्पात्मक प्रयोग होते हैं। समय एक साधन है। इस साधन का उपयोग अगर गंदे तथा अश्लील साहित्य पढ़कर, लड़ाई-झगड़ा कर अथवा अन्य कार्य कर व्यतीत किया जाए तो पुन: इसी समय का उपयोग रचनात्मक कार्यों, जैसे—सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, पढ़ाई आदि में नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर समय का व्यय सोच-समझकर आय अर्जित करने के लिए किया जाए तब पारिवारिक आय में वृद्धि होती है तथा मन में प्रसन्नता होती है। इसके विपरीत अश्लील साहित्य पढ़ने अथवा गंदी पिक्चरें देखने से केवल समय नष्ट होता है। साथ ही मन में गंदे विचार आते हैं।